पैटर्न मेकिंगः डार्ट और फिटिंग

पैटर्न मेकिंग की शृंखला के पहले भाग में निफ्ट में एसोसिएट प्रोफेसर एन.ए.खान ने बेसिक बॉडिस और पैटर्न के आधारभूत तथ्यों के बारे में बताया था. इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए वे डार्ट और उसके प्रयोग के बारे में बता रहे हैं कि कैसे डार्ट से फिटिंग संबंधी समस्याएं हल की जा सकती हैं.

सिलाई की प्रक्रिया में फैब्रिक को शरीर पर सही तरीके से फिट करने के लिए कई तकनीकें अपनाई जाती है. डार्ट ऐसी ही एक तकनीक है. डार्ट्स फैब्रिक के फोल्ड होते हैं, जो गारमेंट को त्रिआयामी आकार देते हैं. लेडिजवियर में डार्ट का इस्तेमाल एक आम बात है, क्योंकि इनसे गारमेंट, शरीर के संरचना-वक्र, घुमाव, आकार व आकृति के अनुसार बिल्कुल सही फिट आता है. आमतौर पर डार्ट दो स्टिचलाईनों से बना होता है जो आपस में बंद हो कर फैब्रिक की निश्चित मात्रा पैटर्न से निकाल देती हैं. इससे फैब्रिक डार्ट के भाग में शरीर के और पास आ जाता है, और फिटिंग बेहतर हो जाती है. डार्ट की स्टिचलाईनों को डार्टलेग कहते हैं. डार्टलेग आपस में डार्ट प्वाईंट पर मिलते हैं. डार्ट प्वाईंट शरीर में उभरे हुए बिन्दु पर होता है.

डार्ट का मुख्य काम फैब्रिक को कमर, वक्ष (बस्ट), कूल्हों(हिप) या शरीर के अन्य उभरे स्थानों पर फिट करना है. सामान्य फिटिंग के लिए डार्ट लेग सीधे व रेखाकार होते हैं. जबकि टाईट फिटिंग के लिए डार्टलेग को अवतल (कन्केव) बनाया जाता है, जिससे डार्ट के अंत में फैब्रिक इन्टेक (निकाला गया फैब्रिक) बढ़ जाता है.

यह जरूरी नहीं है कि उभार को प्रदर्शित करने या फैब्रिक फिट करने के लिए डार्ट ही प्रयोग की जाए, ऐसा करने के लिए प्लीट, गैदर, टक्स और स्टाइल लाइन का भी प्रयोग किया जा सकता है. इनमें बड़ा फर्क यह है कि डार्ट पूरी तरह फिट के लिए डाली जाती है जबकि दूसरे तरीके पूरी तरह फिट नहीं दे सकते. डार्ट इनटेक को अगर प्लीट या गैदर में बदल दें तो अस्पष्ट उभार प्रदर्शित होगा क्योंकि प्लीट में कपड़े को फोल्ड कर के कच्चा टांका लगाया जाता है, पर डार्ट में इसी फोल्ड की पूरी सिलाई की जाती है.

शेप के अनुसार डार्ट दो तरह के होते हैं- हिप डार्ट और फिश डार्ट. हिप डार्ट को 1 शेप डार्ट या सिंगल एंड डार्ट भी कहते हैं. इन डार्ट्स में एक डार्ट प्वाइंट होता है. यह डार्ट फ्रंट में वेस्ट से ऊपर किसी भी भाग में डाली जा सकती है जैसा कि फोटो-1 में दिखाया गया है.

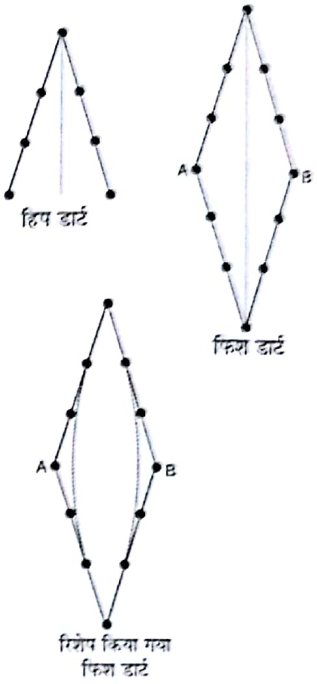

फिश डार्ट को डबल एंडेड डार्ट भी कहते हैं. यह डार्ट किसी भी ड्रेस को वेस्ट पर शेप देने के लिए होती है जो वेस्ट एरिया से पास होते हुए अपर हिप तक जाती है. यह डार्ट बस्ट व हिप के बीच फैब्रिक को फिट करने के लिए डाला जाता है. इसलिए इसमें दो डार्ट प्वाईंट होते हैं. एक बस्ट के उभार पर व दूसरा हिप के उभार पर. फोटो-1

ध्यान रहे फिश डार्ट में A-B की दूरी 4 सें.मी. से ज्यादा न हो, अगर होगी तो कमर से नीचे के भाग में डिफेक्ट आ सकते हैं. फिश डार्ट को डॉटिड लाईन द्वारा रिशेप किया गया है, जो गोलाई में है.

खुला डार्ट- दोनों डार्ट लेग को बंद कर उनके बीच के फैब्रिक को सिला जाता है, जिससे फिटिंग बेहतर होती है

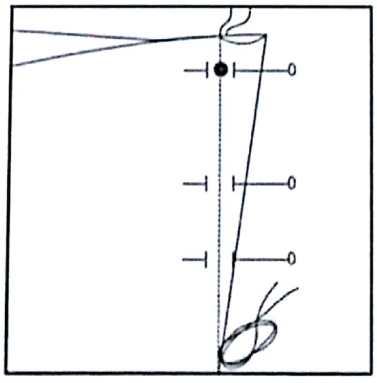

एक बंद डार्ट- फैब्रिक का त्रिकोणीय हिस्सा फिट सही करने के लिए बंद कर दिया गया है, इससे गारमेंट अब शरीर के ज्यादा पास आकर फिट होगा.

Scanned by CamScanner